✺ 24 अप्रैल 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] यहाँ बाप तुम्हें सद्गुरू के रूप में साइलेन्स रहना सिखलाते हैं। तुम साइलेन्स में रह अपने विकर्मों को दग्ध करते हो। तुम्हें ज्ञान है कि अब घर जाना है। दूसरे सतसंगों में शान्ति में बैठते हैं लेकिन उन्हें शान्तिधाम का ज्ञान नहीं है।

2] अभी तुम बच्चों को मालूप पड़ा है। पहले-पहले देवता ही सबसे जास्ती जन्म लेते हैं। उसमें भी जो पहले-पहले सूर्यवंशी हैं वह पहले आते हैं, 21 पीढ़ी वर्सा पाते हैं। कितना बेहद का वर्सा है– पवित्रता-सुख-शान्ति का। सतयुग को पूरा सुखधाम कहा जाता है। त्रेता है सेमी क्योंकि दो कला कम हो जाती है। कला कम होने से रोशनी कम होती जाती है। चन्द्रमा की भी कला कम होने से रोशनी कम हो जाती है। आखरीन बाकी लकीर जाकर बचती है। निल नहीं होता है। तुम्हारा भी ऐसे है–निल नहीं होते। इसको कहा जाता है आटे में नमक।

3] गायन भी है शिव भगवानुवाच, मातायें स्वर्ग का द्वार खोलती है इसलिए वन्दे मातरम् गाया जाता है। वन्दे मातरम् तो अन्डरस्टुड पिता भी है। बाप माताओं की महिमा को बढ़ाते हैं। पहले लक्ष्मी, पीछे नारायण। यहाँ फिर पहले मिस्टर, पीछे मिसेज। ड्रामा का राज़ ऐसा बना हुआ है।

✺ योग-

1] जब तक पवित्र आत्मायें नहीं बनी हैं, तब तक वापिस घर कोई जा न सके। जाता तो सबको है इसलिए पाप कर्मों की पिछाड़ी में सजायें मिलती हैं, फिर पद भ्रष्ट भी हो जाता है। मानी और मोचरा भी खाना पड़ता है क्योंकि माया से हारते हैं। बाप आते ही हैं माया पर जीत पहनाने। परन्तु गफलत से बाप को याद नहीं करते। यहाँ तो एक बाप को ही याद करना है।

2] शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो पाप विनाश होंगे, इसको योग अग्नि कहा जाता है। तुम सब ब्राह्मण हो। योग सिखाते हो पवित्र होने के लिए।

3] याद में कभी गफलत नहीं करना है। देह-अभिमान के कारण ही माया याद में विघ्न डालती है, इसलिए पहले देह-अभिमान को छोड़ना है। योग अग्नि द्वारा पाप नाश करने हैं।

✺ धारणा-

1] मेरे पन के अनेक रिश्तों को समाप्त करना ही फरिश्ता बनना है।

✺ सेवा-

1] बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। तो तुमको भी यह सर्विस करनी है।